आत्मनिवेदन

'प्रत्नकीर्ति' के द्वितीय-भाग का पहला अंक पाठकों के हाथ समर्पित है। हमारे लगातार प्रयत्नों के बावज़ूद 'प्रत्नकीर्ति' के उद्देश्यों के अनुरूप लेख हमें नहीं मिल पा रहे। संस्कृत-शोध अनुसंधान की वर्तमान धारा अभी भी 'भास-कालिदास' और 'तुलनात्मक-विवेचनात्मक अध्ययन' के मोह को नहीं छोड़ पा रही और यही कारण है कि जो लेख हमें मिलते हैं वे इतने घिसे-पिटे विषयों और तथ्यों पर होते हैं कि श्रमकर्त्ता के श्रम और काल-व्यय दोनों पर ही बड़ा दुःख होता है।

प्रस्तुत अंक में चार लेख और एक कृति का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। चारों ही लेख अपने क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। इन लेखों में तीन लेख प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने विद्वान् लेखकों से निवेदन कर प्रत्नकीर्ति के लिये लिखवाया है। पहला लेख उदयशंकर दुबे जी का है। दुबे जी हस्तलिखित-ग्रन्थों की ख़ोज़ में माहिर उस्ताद हैं और यदि आपको चुनौती देकर यह कह दिया जाए कि फ़लां कवि या कृति की कोई हस्तलिखित प्रति उपलब्ध नहीं या देखने को नहीं मिलती, तो अपना जी-जान लगाकर आप उस कृति की पाण्डुलिपि अवश्य ढूंढ निकालेंगे।

मैं पिछले दो वर्ष से दुबे जी को रहीम की कृतियों की हस्तलिखित-प्रतियाँ ढूंढने से सम्बन्धित निवेदन कर रहा था। यह अज़ीब इत्तैफ़ाक़ है कि रहीम की कृतियों की हस्तलिखित प्रतियाँ या तो मिलती ही नहीं या बहुत ही कम मिलती हैं। बड़े से बड़े हस्तलिखित-ग्रन्थागारों में भी रहीम के हस्तलिखित ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। संयोग से दुबे जी को पिछले महीनों दतिया-स्टेट् (मध्य प्रदेश) की लायब्रेरी में संरक्षित एक हस्तलिखित ग्रन्थ में रहीम के कुछ छन्द मिले। हालांकि जिस पाण्डुलिपि के आधार पर दुबे जी का लेख यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है वह स्वयं रहीम की किसी कृति की हस्तलिखित-प्रति न होकर 'रामलीला' हेतु तैयार की गई हस्तलिखित-प्रति है जिसमें रहीम के 'खेटकौतुकम्' से दो छन्द उद्धृत हैं। लेकिन रहीम की कृतियों के हस्तलिखित-प्रतियों की अनुपलब्धता के सन्दर्भों में यह भी एक विशिष्ट प्रकार का साक्ष्य है, ऐसा सोचकर हम इसे लेख के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं।

डॉ. ज्ञानप्रकाश त्रिपाठी वर्तमान गणित-शास्त्र में निष्णात विद्वान् हैं। 'भारतीय गणित-शास्त्र का इतिहास' के सन्दर्भ में उनसे प्रायः मेरी चर्चाएं होती रहती हैं और इस क्रम में पिछले कई बरस से मैं उन्हें 'सुधाकर द्विवेदी' और 'शंकरबालकृष्ण दीक्षित' के बाद इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों और उनके निष्कर्षों से अनभिज्ञ 'गणितशास्त्र के इतिहास' की दीन-दशा का रोना रोया करता और उनसे निवेदन करता कि उपर्युक्त विद्वानों के बाद हुए 'भारतीय गणित और खगोल' सम्बन्धी इतिहास-कार्यों से हिन्दी-भाषी जनता को परिचित कराएं। इस रूप में उन्होंने मेरा निवेदन इस वर्ष स्वीकार किया और 'गणित तथा खगोल' के सन्दर्भों में पिछली

शताब्दी हुए कार्यों को हिन्दी में प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया। इस क्रम में यह निश्यच हुआ कि 'प्रत्नकीर्ति' के उद्देश्यों के अनुरूप पहले संस्कृत की हस्तलिखित-कृतियों में संरक्षित गणित-साहित्य और उनके उद्धारकों पर परिचयात्मक आलेख प्रस्तुत किए जाएं। बाद को इनके आधार पर 'इतिहास' की बात की जाएगी।

बिमलेश कुमार मौर्य Ph. D. शोधोपाधि के लिए 'वाल्मीकिरामायण एवं कम्बोडियन रामकथाश्रित ग्रन्थ रामकीर्तिमहाकाव्यम्' का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने उनसे भारतीय एवं भारतद्वीपीय रामकथाश्रित-ग्रन्थों में उपलब्ध 'सीता-परित्याग' के विविध कारणों को एकत्रित करने और उसे एक आलेख की शक्ल में प्रस्तुत करने का निवेदन किया था। 'सीता-परित्याग' के विविध कारण कई दृष्टियों से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण विषय था जिसे पढकर पाठकों को नए तथ्य व नए आयाम हासिल होंगे।

कृति-परिचय के अन्तर्गत **Moonlight of the Emperor Jahangir's Glory** नामा कृति का परिचय प्रस्तुत किया गया है जो कि 'जहाँगीरजसचन्द्रिका' का सम्पादित संस्करण तथा अंग्रेज़ी-अनुवाद सहित एक श्रेष्ठ प्रकाशन है। यह ग्रन्थ इस मामले में भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है कि इसे इटली की हिन्दी-विदुषी एक महिला ने इसे सम्पादित, अनूदित तथा प्रकाशित किया है।

सम्पादक